

आजादी का अमृत महोत्सव (India@75) कार्यक्रम के दौरान केन्द्रीय मृदा एवं सामग्री अनुसंधानशाला में "पारंपरिक जल निकायों के पुनरुद्धार से संबंधित जागरूकता" के विषय पर श्री राजेंद्र सिंह सेहरा, वैज्ञानिक 'डी' द्वारा ऑनलाइन भाषण दिया गया। [#आजादीकाअमृतमहोत्सव](#)

**श्री कामे गौड़ा-पानी अन्ना के नाम से मशहूर**

- > 85 वर्षीय श्री कामे गौड़ा मूल रूप से कर्नाटक के मंडया जिले के देशनाडोडी गांव के रहने वाले हैं।
- > वह चरवाहा समुदाय से आते हैं और वह आर्थिक तौर पर गरीब हैं, लेकिन उनके दिल में मानवजाति का कल्याण करने का जज्बा कूट-कूट कर भरा हुआ है।
- > प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने मन की बात कार्यक्रम में श्री कामे गौड़ा का जिक्र करते हुए उन्हें जल योद्धा की संज्ञा दी। उन्होंने कहा,
- > "वे अपने इलाके में पानी की समस्या को दूर करना चाहते हैं, इसलिए जलसंरक्षण के काम में छोटे-छोटे तालाब बनाने में जुटे हुए हैं। आप हैरान होंगे कि 80-85 वर्ष के श्री कामेगौड़ा जी, अब तक 16 तालाब खोद चुके हैं, अपनी मेहनत से, अपने श्रम से।"
- > कर्नाटक की सरकार ने उन्हें आजावीन निःशुल्क पब्लिक ट्रांसपोर्ट इस्तेमाल करने का पास दिया है।

reiness related to revival of Traditional Water Bodies by Shri R. S. Sehra, Scientist 'D', CSMRS-20211018

**डाक्टर हीरालाल**

लोगों की समस्या को हल करने का जिम्मा उत्तर प्रदेश, बांदा के तत्कालीन जिलाधिकारी डा. हीरालाल ने उठाया। वर्षा जल संचयन के लिए स्कूलों, सरकारी भवनों, निजी स्थानों आदि पर रेनवाटर हार्वेस्टिंग का ढांचा तैयार किया गया। छतों पर एकत्र होने वाले पानी को कुओं में उतारा गया। श्रमदान कर तालाबों की सफाई कर 572 तालाबों का जीर्णोद्धार किया। जल संरक्षण के लिए 1536 रिचार्ज पिट/ट्रेंच, वर्षा जल संचयन के 82 ढांचे, 1050 नए खेत तालाब बनाए तथा 2111 किसानों ने मेढबंदी करवाई। उनके नेतृत्व में किए गए इस कार्य से गांवों को जब पानी मिलने लगा तो सभी के चेहरों पर एक नई चमक लौट आई। जल संरक्षण के लिए डा. हीरालाल के इन प्रयासों को 6 राष्ट्रीय पुरस्कार मिले चुके हैं और दिसंबर 2019 में अभियान को लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स में भी स्थान मिला था।

ated to revival of Traditional Water Bodies by Shri R. S. Sehra, Scientist 'D', CSMRS-

## बांस ड्रिप सिंचाई प्रणाली



- यह जल संरक्षण की एक शानदार ड्रिप सिंचाई प्रणाली है। जिसमें धारा और झरने के पानी का उपयोग विभिन्न आकार के बांस के पाइपों द्वारा किया जाता है जिससे आउटपुट उत्पादन को 20-80 बूंद प्रति मिनट तक कम कर देती है, जो कि **सुपारी और काली मिर्च** की फसलों के लिए शानदार है।
- यह सिंचाई प्रणाली अलग-अलग क्रॉस सेक्शन के बांस के पाइपों के उपयोगों से बनी है जो पहाड़ी की चोटी पर बारहमासी झरनों से पानी लेते हैं और पानी के प्रवाह को पाइप की बदलती स्थिति (आकार) से नियंत्रित किया जाता है। यह विधि इतनी कुशल है कि पानी को पौधों की जड़ों पर गिराने में सक्षम होती है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई अपवाह और अपव्यय नहीं हो।
- **मेघालय** में प्रचलित, इस प्रणाली का प्राथमिक उद्देश्य वृक्षारोपण की सिंचाई करना है।
- 200 साल पुरानी इस प्रणाली में हर मिनट 18-20 लीटर पानी बांस की पाइप प्रणाली में प्रवेश करके नीचे के खेतों की सिंचाई करता है।

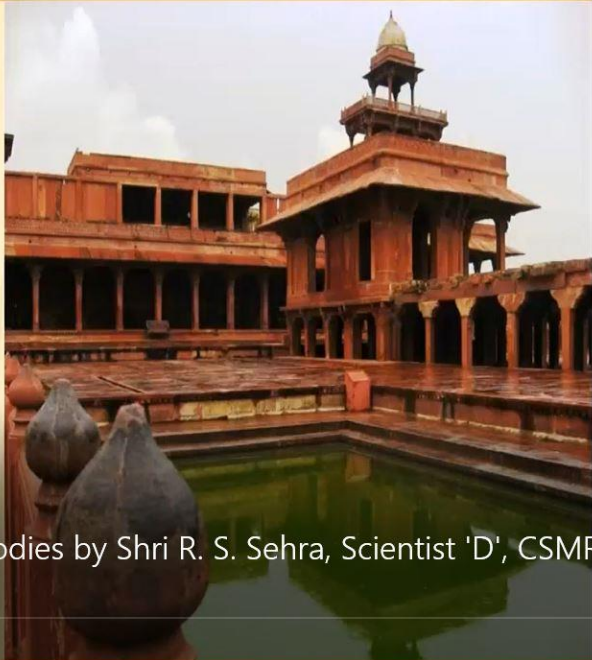


related to revival of Traditional Water Bodies by Shri R. S. Sehra, Scientist 'D', CSMRS-20

## 450 साल से सहेजा जा रहा बूंद-बूंद पानी



- मुगलकालीन वर्षा जल संचयन प्रणाली के जाग्रत उदाहरण **फतेहपुर सीकरी** में स्थित **शेख सलीम चिश्ती की दरगाह व अकबर के किले** में आज भी मौजूद हैं और बाकायदा काम कर रहे हैं। दरगाह परिसर में स्थित संगमरमरी मजार की छत से बारिश का पानी **मजार के पोले खंभों** से होते हुए परिसर में बनी ढकी हुई नालियों से होकर एक भूमिगत कुएं में जाता है।
- पेयजल किल्लत होने पर लोग संग्रहीत वर्षा जल का पीने के लिए उपयोग करते थे, कुछ लोग आज भी इसे पवित्र जल माने जरूरत पड़ने पर पीने के काम में लाते हैं।
- वर्षा जल संचयन की यह प्रणाली वर्ष **1571** में इस निर्माण के समय ही बनी थी और आज भी सुचारु है।



related to revival of Traditional Water Bodies by Shri R. S. Sehra, Scientist 'D', CSMRS-20